

Padma Shri



SHRI BRAHMANAND SAGUN KAMAT SHANKHWALKAR

Shri Brahmanand Sagun Kamat Shankhwalkar is a former Indian Footballer and captain of Indian Football Team who represented the country and several clubs with distinction as goalkeeper.

2. Born on 6th March, 1954, in Taleigao, located on the outskirts of Goa's capital city Panaji, Shri Shankhwalkar is considered one of India's best goalkeepers, whose career started in 1970 and culminated in 1995, spanning 25 successful years.

3. Shri Shankhwalkar captained the Indian national football team from 1983 to 1986 and has more than 70 appearances for the country. He represented Goa for a record 17 times at the National Football Championship for the Santosh Trophy. While he played for several Goan clubs, he spent the most of the time at Salgaocar Sports Club between 1974 and 1991, during which time he won all the top honours in Indian football. Among the trophies that he won included Federation Cup, Rovers Cup, Sait Nagjee Trophy, Puttaiah Memorial Soccer, TFA Shield and Nehru Memorial Soccer.

4. Shri Shankhwalkar represented the Indian football team in various international tournaments such as the AFC Youth Championship (1975, 1976), Marah Alam Cup, Afghanistan (1976-77), Merdeka Cup, Malaysia (1976, 1982, 1986), King's Cup, Thailand (1977), President's Cup, South Korea (1977, 1982, 1986), Great Wall Cup, China (1984), Asia Cup, Singapore (1984), Delhi Asian Games 1982, Seoul Asian Games 1986, Nehru Gold Cup (1983, 1984, 1985), Olympic qualifying rounds and World Cup qualifiers, finishing his international career with more than 70 cups.

5. Recognizing his contribution to Indian football, Shri Shankhwalkar was conferred the prestigious Arjuna Award by the Government of India in 1998 at the hands of the then President of India, Late Shri K.R. Narayanan. He was named the Player-of-the-Decade for 1985-1995 by the All India Football Federation and, amongst other awards, won the Bakshi Bahaddar Jivbadada Kerkar Award in 1977, the highest recognition for sports in Goa. The Goa Government has dedicated a lesson in the school textbook on the life and personality of Shri Shankhwalkar, so that this can encourage and motivate children to take up sports. He has also contributed immensely as coach and Sports Administrator.

पद्म श्री



श्री ब्रम्हानंद स. का. शंखवालकर

श्री ब्रम्हानंद सगुन कामत शंखवालकर एक पूर्व भारतीय फुटबॉलर और भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान हैं, जिन्होंने गोलकीपर के रूप में देश और कई क्लबों का प्रतिनिधित्व किया है।

2. 6 मार्च, 1954 को गोवा की राजधानी पणजी के बाहरी इलाके में स्थित तालेगाव में जन्मे, श्री शंखवालकर को भारत के सर्वश्रेष्ठ गोलकीपरों में से एक माना जाता है जिनका 25 वर्षों का सफल कैरियर, जो वर्ष 1970 में शुरू हुआ और वर्ष 1995 में समाप्त हुआ।

3. श्री शंखवालकर ने वर्ष 1983 से 1986 तक भारतीय राष्ट्रीय फुटबॉल टीम की कप्तानी की और देश के लिए 70 से अधिक बार मैदान में उतरे। उन्होंने संतोष ट्रॉफी के लिए राष्ट्रीय फुटबॉल चैम्पियनशिप में रिकार्ड 17 बार गोवा का प्रतिनिधित्व किया। हालांकि वह कई गोवा क्लबों के लिए खेले, परंतु उन्होंने वर्ष 1974 और 1991 के बीच सालगांवकर स्पोर्ट्स क्लब में सबसे अधिक समय बिताया, इस दौरान उन्होंने भारतीय फुटबॉल में सभी प्रमुख सम्मान जीते। उन्होंने जो ट्रॉफियां जीतीं उनमें फेडरेशन कप, रोवर्स कप, सैत नागजी ट्रॉफी, पुट्टैया मेमोरियल सॉकर, टीएफए शील्ड और नेहरू मेमोरियल सॉकर शामिल हैं।

4. श्री शंखवालकर ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों जैसे एएफसी यूथ चैंपियनशिप (1975, 1976), मराह आलम कप, अफगानिस्तान (1976–77), मर्डेका कप, मलेशिया (1976, 1982, 1986), किंग्स कप, थाइलैंड (1977), प्रेसिडेंट कप, दक्षिण कोरिया (1977, 1982, 1986), ग्रेट वॉल कप, चीन (1989), एशिया कप, सिंगापुर (1984), दिल्ली एशियन गेम्स 1982, सिओल एशियन गेम्स 1986, नेहरू गोल्ड कप (1983, 1984, 1985) में भारतीय फुटबॉल टीम का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने ओलम्पिक क्वालिफाईंग राउण्डों तथा वर्ल्ड कप क्वालिफाईर्स को शामिल करते हुए 70 से भी अधिक कपों को जीतते हुए अपना अंतर्राष्ट्रीय कैरियर पूर्ण किया।

5. भारतीय फुटबॉल में उनके योगदान का सम्मान करते हुए, श्री शंखवालकर को भारत सरकार द्वारा उन्हें 1998 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री के. आर. नारायणन के हाथों से प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार प्रदान किया गया। उनको अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ द्वारा 1985–95 के लिए 'दशक के खिलाड़ी' की उपाधि दी गई और उन्होंने अन्य पुरस्कारों के साथ-साथ वर्ष 1977 में बख्शी बहादुर जीवबदादा केरकर पुरस्कार जीता, जो गोवा में खेलों के लिए सर्वोच्च सम्मान है। गोवा सरकार ने स्कूल पाठ्यपुस्तक में श्री शंखवालकर के व्यक्तित्व तथा जीवन पर एक पाठ उनको समर्पित किया है, ताकि यह बच्चों को खेलों के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित कर सके। उन्होंने कोच और खेल प्रशासक के रूप में भी बहुत योगदान दिया है।